कथा सरिता

आसक्ति

महात्मा बुद्ध को लगातार सात दिन तक एक ही आसन पर बैठे साधनारत देख सुजाता बड़ा विस्मित हो रही थी। तभी सामने से एक शव लिए जाते हुए कुछ व्यक्ति दिखाई दिये। उस शव को देखते ही बुद्ध हँसने लगे। सुजाता ने प्रश्न किया -''योगीराज! कल तक तो आप शव को देखकर दुखी हो जाते थे, आज वह दुख कहाँ चला गया?''

बुद्ध ने कहा -''बालिके! सुख-दुख मनुष्य की कल्पना मात्र है। कल तक जड़ वस्तुओं में आसक्ति होने के कारण यह भय था कि कहीं यह न छूट जाए, वह न बिछुड़ जाए। यह भय ही दुख का कारण था, आज मैंने जान लिया कि जो जड़ है, उसका तो गुण ही परिवर्तनशील है, पर जिसके लिए दुख करते हैं, वह तो न परिवर्तनशील है, न नाशवान। अब तू ही बता -जो सनातन वस्तु पा ले, उसे नाशवान वस्तुओं का क्या दुख?''

आत्मावलंबन की उपेक्षा व्यक्ति को मंजिल तक पहुंचने नहीं देती है। सद्गति का लक्ष्य समीप होते हुए भी वे अपने इस परम पुरूषार्थ की अवहेलना कर पतन के गर्त में भी जा पहुंचते हैं।

खुशी

एक शहर में बहुत अमीर सेठ रहता था। अत्यधिक धनी होने पर भी वह हमेशा दुखी ही रहता था। एक दिन ज्यादा परेशान होकर वह एक ऋषि के पास गया और अपनी सारी समस्या उन्हें बताई।

ऋषि ने सेठ को कहा कि कल तुम इसी वक्त यहां आना मैं तुम्हारी समस्या का हल बता दूंगा।

अगले दिन सेठ जब आश्रम पहुंचा तो देखा कि ऋषि सड़क पर कुछ ढूंढने में व्यस्त थे।

सेठ ने गुरूजी से पूछा कि महर्षि आप क्या ढूंढ रहे हैं? ऋषि बोले कि मेरी एक अंगूठी गिर गई है उसे ढूंढ रहा हूँ। काफी देर बाद सेठ ने फिर ऋषि से पूछा कि महाराज, आपकी अंगूठी कहां गिरी थी? ऋषि ने जवाब दिया कि मेरी अंगूठी मेरे आश्रम में गिरी थी लेकिन अभी वहाँ बहुत अंधेरा है इसलिए यहाँ मैं सड़क पर रोशनी में अंगूठी ढूंढ रहा हूँ।

सेठ ने चौंकते हुए पूछा कि जब आपकी अंगूठी आश्रम में गिरी है तो यहां क्यूं ढूंढ रहे हैं? ऋषि ने मुस्कुराते हुए कहा कि यही तुम्हारे कल के प्रश्न का उत्तर है। खुशी तो मन के भीतर, आंतरिक प्राप्तियों के आधार प्राप्त होती है। वह तो मन में छुपी हुई है लेकिन तुम उसे धन में खोजने की कोशिश कर रहे हो। इसलिए तुम दुखी हो। इसे सुनकर सेठ उनके चरणों में गिर पड़ा।

प्रेम का चमत्कार

एक महिला थी, एक दिन प्रातःकाल उसके घर के दरवाज़े पर दस्तक हुई, उसने दरवाज़ा खोला तो देखा की श्वेत दाढ़ी वाले तीन बुज़ुर्ग उसके दरवाज़े पर खड़े हैं। तीनों वृद्धों को उस विनम्र महिला ने घर के भीतर आने के लिए आमंत्रित किया। उनमें से एक बोला, 'हम तीनों एक साथ आपके घर नहीं आ सकते। महिला की आंखों में जिज्ञासा देख उस बुज़ुर्ग ने अपने साथ खड़े दूसरे की ओर संकेत करते हुए कहा, 'ये है धन'। दूसरे बुज़ुर्ग की ओर इशारा करते हुए कहा, 'ये है सफलता'। और अंत में अपना परिचय दिया, 'मैं प्रेम हूं'। तब तक बुज़ुर्ग ने उस महिला से आग्रह किया कि वो घर के भीतर जाए और अपने पति से पूछे कि वो इन तीनों में से किसे अपने घर के अंदर बुलाना चाहते हैं।

वह महिला अंदर गई और अपने पति को सारा हाल कह सुनाया, उसके पति को काफी आनंद का अनुभव हुआ 'अरे वाह! ये तो बड़े सौभाग्य की बात है। पर तीनों में से किसी एक को बुलाना है तो धन को ही बुला लो।' पति ने विचार प्रकट किया। उसकी पत्नी सहमत नहीं थी। 'हमें सफलता को आमंत्रित करना चाहिए।' अचानक बहू आ गई और उसने अपने विचार प्रकट किए, 'मेरे विचार से हमें प्रेम को बुलाना चाहिए, हमारा घर प्रेम से भर जाएगा।'

महिला के पति को यह सुझाव काफी पसंद आया। महिला उल्टे पैर वापिस गई और निवेदन किया कि आपमें से जो भी प्रेम हैं, वो कृपया हमारे घर के भीतर आ जाएं। जैसे ही प्रेम ने दरवाज़े के भीतर प्रवेश किया, शेष दोनों भी उसके पीछे हो लिए। यह देखकर महिला आश्चर्यचकित रह गई। यह देखते हुए प्रेम ने कहा, 'अगर तुमने धन या सफलता को आमंत्रित किया होता, तो शेष दोनों चले जाते, लेकिन तुमने प्रेम को चुना और जहां प्रेम है वहां धन और सफलता तो पीछे-पीछे चलती ही है।'

तीन सीखें

एक राजा के तीन पुत्र थे। एक दिन राजा के मन में आया कि पुत्रों को कुछ ऐसी शिक्षा दी जाये कि समय आने पर वो राज-काज सम्भाल सकें।

राजा ने सभी पुत्रों को बुलाकर कहा कि हमारे राज्य में नाशपाती का कोई वृक्ष नहीं है, मैं चाहता हूँ तुम सब चार-चार महीने के अंतराल पर इस वृक्ष की तलाश में जाओ और पता लगाओ कि वो कैसा होता है? राजा की आज्ञा पाकर तीनों पुत्र बारी-बारी से गए और वापिस लौट आए। पहले पुत्र ने लौटकर कहा - ''पिताजी, वह पेड़ तो बिल्कुल टेढ़ा-मेढ़ा और सूखा हुआ था।''

'' नहीं, नहीं वह तो बिल्कुल हरा-भरा था, लेकिन शायद उसमें कुछ कमी थी क्योंकि उस पर एक भी फल नही लगा था।'' दूसरे पुत्र ने पहले को बीच में रोकते हुए कहा।

फिर तीसरा पुत्र बोला -'' भैया, लगता है आप दोनों ही कोई गलत पेड़ देख आये क्योंकि मैंने सचमुच नाशपाती का पेड़ देखा, वो बहुत ही शानदार था और फलों से लदा पड़ा था।''

तीनों पुत्र अपनी-अपनी बात के लिए आपस में विवाद करने लगे। तभी राजा सिंहासन से उठे और बोले -''पुत्रों! दरअसल तुम तीनों ने अपनी रीति से उस वृक्ष का सही वर्णन किया है। मैंने जानबूझकर तुम्हें अलग-अलग मौसम में वृक्ष खोजने भेजा था और तुमने जो देखा वो उस मौसम के अनुसार था।''

मैं चाहता हूँ कि इस अनुभव के आधार पर तुम तीन बातों को गांठ बांध लो। पहली - किसी चीज के बारे में सही और पूर्ण जानकारी चाहिए तो तुम्हें उसे लम्बे समय तक देखना, परखना चाहिए, फिर चाहे वो कोई विषय हो, वस्तु हो या फिर कोई व्यक्ति ही क्यों न हो।

दूसरा - हर मौसम एक सा नहीं होता, जिस प्रकार वृक्ष मौसम के अनुसार सूखता, हरा-भरा या फलों से लदा रहता है, उसी प्रकार मनुष्य के जीवन में भी उतार-चढ़ाव आते रहते हैं, अतः अगर तुम कभी भी बुरे दौर से गुजर रहे हो तो अपनी हिम्मत और धैर्य बनाये रखो, समय अवश्य बदलता है।

और तीसरी बात -अपनी बात को ही सही मानकर अड़े मत रहो, अपना दिमाग खोलो और दूसरों के विचारों को भी जानो। यह संसार ज्ञान से भरा पड़ा है, चाह कर भी तुम अकेले सारा ज्ञान अर्जित नहीं कर सकते, इसलिए भ्रम की स्थिति में किसी ज्ञानी व्यक्ति से सलाह लेने में संकोच मत करो।

दूसरा पहलू

एक चित्रकार था। वह दुनिया के सबसे सुंदर आदमी का चित्र बनाना चाहता था। वह चित्रकार सुंदर आदमी की तलाश में हर जगह भटका। लेकिन उसे वहां ऐसा कोई मनुष्य नहीं मिला जिसे देखकर लगे कि उसमें समग्र सुंदरता निवास करती है। फिर वह भटकते-भटकते एक पहाड़ी पर पहुंचा। उस पहाड़ी पर एक चरवाहा मस्त होकर, मुग्ध होकर बांसुरी बजा रहा था। उसकी बांसुरी में ऐसा स्वर था कि सारी प्रकृति शांत होकर सुन रही थी, पक्षी बोलना भूल गए थे। सारा वातावरण संगीतमय हो रहा था। जब उस चित्रकार ने उसे देखा तो देखता रह गया। उसके होठों पर बच्चों जैसी अबोध मुस्कान थी। उसकी आंखों से किसी दूर देश की खबर आती थी। उसे देखकर चित्रकार को लगा कि इस आदमी में सचमुच संसार का सबसे सुंदर मासूम चेहरा निवास करता है। उसने उसकी तस्वीर बनाई और वह तस्वीर पूरे संसार में बिकी और मानव जाति को पता लगा कि सच में मनुष्य में परमात्मा निवास करता है।

लेकिन जब पचास साठ साल बाद वह बूढ़ा हो रहा था तो किताबों से उसने पढ़ा कि मनुष्य में शैतान भी निवास करता है। अगर मैं शैतान की तस्वीर नहीं बनाऊंगा तो जीवन का पूरा और सही चित्र प्रस्तुत नहीं कर पाऊंगा। इसलिए वह शैतान की तलाश में निकल पड़ा। वह बड़े-बड़े गंदे स्थानों में गया। घूमते-घूमते वह एक जेलखाने में पहुंचा जहां एक कैदी था जिसने सात खून किए थे और दो दिन बाद उसे फांसी लगने वाली थी। उसने जब उस कैदी का चेहरा देखा तो वह घबरा गया।

उसने इतना भयानक, कुरूप व वीभत्स चेहरा कभी नहीं देखा। उसने उसकी तस्वीर बनाई ओर जब तस्वीर बनकर तैयार हो गई तो वह अपनी पहली वाली तस्वीर से तुलना करने लगा कि कला की दृष्टि से वह तस्वीर श्रेष्ठ है या पहले वाली। जब वह दोनों तस्वीरें देख रहा था तो उसे पीछे से रोने की आवाज़ सुनाई दी। वह कैदी फूट-फूट कर रो रहा था। चित्रकार ने पूछा कि तुम सात खून करके नहीं रोए। ये तस्वीरें देखकर क्यों रोए? कैदी ने कहा - 'हे चित्रकार, तुझे याद नहीं, आज से पचास वर्ष पूर्व जिसका तुमने चित्र बनाया था वह मैं ही हूं।' चित्रकार यह सुनकर आश्चर्यचकित हो गया। वह बोला -'आदमी के भीतर ही हैवान और फरिश्ता छुपा है। हैवान और इंसान बनना आदमी के अपने हाथ में है।'

ग्वालियर-म.प्र.। एग्रिकल्चर युनिवर्सिटी के एच.ओ.डी. व प्रोफेसर्स के लिए 'यौगिक खेती' विषय पर वर्कशॉप करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. महेन्द्र, ब्र.कु. रेखा, ब्र.कु. तारा तथा ब्र.कु. प्रहलाद।

हाथरस। 'सात दिवसीय सकारात्मक परिवर्तन शिविर' के समापन अवसर पर कमांडिंग ऑफिर कर्नल कमल कलीटा ब्र.कु. शान्ता को सम्मानित करते हुए।

होडल-हरियाणा। 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु. ऊषा, ब्र.कु. शुक्ला, पूर्व विधायक उदयभान जी, एस.डी.एम. सत्यवान इंडोरा तथा अन्य।

झालावाड़। मातेश्वरी जगदम्बा के 49वीं पुण्य स्मृति दिवस पर मातेश्वरी जी को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए ब्र.कु. मीना।

दिल्ली-किन्सवे कैम्प। रिट्रीट के पश्चात समूह चित्र में यू.के. के ब्र.कु. भाई-बहनें तथा ब्र.कु. साधना।

किन्नौर-हि.प्र.। विश्व की सबसे ऊंचाई वाले गांव 'कोमिक' में ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सरस्वती, ब्र.कु. सपना तथा अन्य।